द्वारा लखिति श्रीमती अनीता जोज़फ
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 17:44 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:23

1. मुझे दु□ख होता है – जब मै देखती हूं की क्लीसयिाई संगतिकेपश्□चात मण्□डली केसदस्□य तुरन्□त घर चले जाते हैं बनिा कसिी से कुशल क्षेम पूछे, बनिा स्□नेह-प्रेम का आदान-प्रदान कयि□ जबकविचन कहता है ‘‘□कदूसरे केप्रतिप्रेम में सरगर्म रहो□’’

2. मुझे दु□ख होता है – जब मै देखती हूं कक्लीसयिा की वभिनि्□न आवश्□यकताओं केप्रतिउसकेसदस्□य देख कर भी अनजान बने रहते हैं□ फटे हु□ पर्दे, टूटता हुआ पलस्□तर, दरवाज़ों केउड़ते हु□ रंग, याजकका पुराना वस्□त्र क्□यों स्□वयं हमें नहीं कचोटते? जबकविचन कहता है – ‘‘इस सेवा कार्य द्वारा ना केवल पवतिर् लोगों की घटयिां पूरी होती हैं वरन् परमेश्□वर को बहुत धन्□यवाद देने की भावना उमड़ती रहती है□’’ (2कुरनि्थयिों 9:12)

3. मुझे दु□ख होता है – जब मै देखती हूं कहिमारे युवा सांसारकिआयोजनों में तो खूब गाते, बजाते, नाचते हैं परन्□तु परमेश्□वर केघर में वाद्ययंत्र सूने पड़े रहते हैं□ प्रशंसा स्□तुतनिरि्जीव लगती है□ जबकविचन कहता है – ‘‘यहोवा केलि□ □कनया गीत गाओ□’’ (भजन संहति 149:1) ‘‘तुरही बजाते हु□ उसकी स्□तुतकिरो, सारंगी और वीणा बजाते हु□ उसकी स्□तुतकिरो□ डफबजाते और नाचते हु□ उसकी स्□तुतकिरो□’’ (भजन संहति 150:3-4)

4. मुझे दु□ख होता है – जब मै देखती हूं कमिसीही घरों में भी परमेश्□वर का दविस सफाई केदनि, धुलाई केदनि या फरि सांसारकिमनोरंजनों में लपि्□त रहने केदनि केरूप में मनाया जाता है□ जबकविचन में लखिा है – ‘‘यदतिू सब्□त केकारण अपने पैर रोकेरहे अर्थात् मेरे पवतिर् दनि में अपनी इच्□छा पूरी ना करे और सब्□त केदनि को आनन्□द का, यहोवा केपवतिर् दनि का आदरयोग्□य दनि माने और उसका सम्□मान करे अर्थात् अपने मार्गों में चलने, अपनी ही इच्□छा पूरी करने तथा अपनी ही बातें बोलने से रूका रहे, तब तू यहोवा में प्रसन्□न रहेगा, और मैं तुझे पृथ्□वी केऊंचे-ऊंचे स्□थानों पर ले चलूंगा, मैं तेरे मूल पुरूष यहोवा केभाग में से तुझे खलिाऊंगा□ यहोवा केमुख से ही यह वचन नकिला है□’’
(यशायाह□ 58:13-14)

□□□□□ □□□□□